मोरंगे

मार्च–अप्रेल 2017

इस बार

रवि, कक्षा–5, उदय पाठशाला गिरिराजपुरा

खिड़की

3 टिंगू की क्या गलती थी?

कविताएँ

7 बुगले / सोने की चिड़िया
कुत्ते भौंके दो हजार
मामा चुप मामी चुप
8 छोकरियों की बकरियाँ
9 शरारती बिल्ली
10 टन टन टन
एक बड़े राजा की बेटी
11 तीर बने तुक्के

कहानियाँ

12 साईकिल वाली बुढ़िया
13 बवण्डर / सच?
14 पिल्ला अगले दिन फिर आया / माफ कर देना
15 बिल्ली और बुढ़िया
16 वो हमारे घर पर आकर क्यों बैठा?

याद की धूप–छाँव में

17 भालू परिवार और वह रात

18 बात लै चीत लै
19 कुछ हमने बढ़ायी
23 मटरगश्ती बड़ी सस्ती
हीहीही–ठीठीठी
26 पखेरू मेरी याद के

सम्पादन : विष्णु गोपाल मीणा
सहयोग : राजकीय विद्यालयों एवं उदय पाठशालाओं के बच्चे, शिक्षक व प्रभात
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जीवनेद्र सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – सुनीता
वर्ष 8 अंक 81–82

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–निदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
हॉटल सिटी हार्ट के सामने,
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

खिड़की

टिंगू की क्या गलती थी ?

टिंगू ने एक रात निश्चय किया कि कल से वह बहुत अच्छा लड़का हो जाएगा। हमेशा अच्छे काम करेगा और दूसरों की भलाई करेगा।

दूसरे दिन सुबह वह जल्दी उठा। उसने सोचा–'अभी से दूसरों का भला करना शुरू कर देना चाहिए।' उसने देखा कि बड़े भैया अभी तक सो रहे हैं। देर तक सोना अच्छी बात नहीं है। फिर सोचा सबसे पहले भैया का भला करूँगा। उनमें जल्दी उठने की आदत डालूँगा।' उसने भैया की रजाई खींचकर कहा–'भैया उठो देर तक सोना खराब बात है।'

ममता साहू
शिक्षिका,
बोदल स्कूल

भाई ने 'ऊं आं' की और रजाई खींचकर करवट बदलकर फिर सो गए। टिंगू को तो भैया का भला करना ही था। वह ठंडा पानी ले आया और उनके मुँह पर डाल दिया। भैया चिल्लाकर उठ बैठे। उन्होंने टिंगू को दो चाँटे जमा दिए।

अब रोना भी जरूरी था। टिंगू थोड़ी देर रोता रहा। वह कहता जाता–'हम तो भला कर रहे थे। उलटे हमें मार पड़ गई।'

टिंगू थोड़ी देर 'टें टूं' करके चुप हो गया। उसने सोचा मुझे निराश नहीं होना चाहिए। अच्छे काम करने में बाधा आती ही है।'

वह बड़ी देर सोचता रहा कि अब किसका भला करना चाहिए। उसे पिताजी की सिगरेट की डिबिया दिखी। उसने मन में कहा–'बस, अब पिताजी का भला करूँगा।

सिगरेट पीना खराब बात है। पिताजी को सिगरेट नहीं पीने दूँगा।' उसने सिगरेट का पैकेट उठाया और नाली में फेंक दिया।'

पिताजी को गुस्सा आया वह चिल्लाए–'क्यों फेंक दिया ?'

टिंगू ने कहा–'बाबूजी, सिगरेट पीना खराब बात है न।' पिताजी को और गुस्सा आया। उन्होंने टिंगू को चाँटा जड़कर कहा–'उल्लू कहीं का, मेरा चाचा बनकर मुझे सुधारता है।'

टिंगू एक कोने में जाकर फिर रोने लगा। दो आदमियों का भला करने में तीन चाँटे पड़ गए। उसने सोचा–'अब क्या करूँ ?'

इतने में बूढ़े बाबा ने पुकारा–'टिंगू इधर आना।'

टिंगू ने कहा–'हम नहीं आते।'

'क्यों ?' बाबा ने पूछा।

टिंगू ने कहा–'पुस्तक में लिखा है कि अच्छे लड़के बुरे आदमी की संगति नहीं करते। हम अच्छे लड़के हैं। आप बुरे आदमी है।'

टिंगू की माँ ने सुना तो डाँटा–'क्यों रे, बाबा से इस तरह बोलते हैं ? उन्हें बुरा आदमी कहता है।' और मां ने टिंगू की पीठ में एक घूँसा मारा।

उसने कहा–'बाबा बुरे आदमी हैं, हैं, हैं, हजार बार हैं ! उन्होंने कल पिताजी से छिपकर तुमसे लड्डू माँग कर नहीं खाए थे ?'

बात सही थी। डॉक्टर ने बाबा को ऐसी चीजें खाने की मनाही की थी।

टिंगू की माँ घबरा उठीं। पिताजी ने बातें सुन ली थीं। उन्होंने बाबा और माँ को डाँटा।

टिंगू ने सोचा–'यह भी अजीब बात है ! मैंने अच्छा लड़का बनने की कोशिश की, तो घर में लड़ाई हो गई। मुझे घूँसे थप्पड़ पड़े, सो अलग।

टिंगू ने अब सोचा–'भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए।' वह भगवान के चित्र के सामने खड़ा हो गया। आँखें बंद कर लीं। वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा–'हे भगवान दया निधान ! तुम सब पर कृपा करते हो। सड़क पर वकील साहब के अहाते में अमरूद का पेड़ है। अमरूद पक गए हैं। उन्हें देखकर मेरी लार टपकती है। कमीज खराब हो जाती है। पर सड़क से उन तक मेरा हाथ नहीं पहुँचता। हे भगवान, तू उसकी एक डाल को सड़क की तरफ इतना झुका दे कि मैं अमरूद तोड़ सकूँ।'

टिंगू के बड़े भैया यह सब सुन रहे थे। उन्होंने पीछे आकर टिंगू का कान पकड़ लिया। टिंगू ने घबराकर आँखें खोल दी। वह समझा कि भगवान ने ही कान पकड़ लिया है। देख तो भैया खड़े हैं।

भैया ने पूछा–'क्यों रे, भगवान से चोरी में सहायता करने की प्रार्थना करता है?'
टिंगू ने कहा–'तो क्या हुआ ! हमारी पुस्तक में कहानी है कि एक लड़के के लोटे में से दूध गिर गया था। उसने भगवान से प्रार्थना की। उन्होंने लोटा भर दिया। वह तो बच्चों के लिए ऐसा करते ही रहते हैं।'
यह सुनकर बड़े भैया खूब हँसें। उन्होंने टिंगू का कान जोर से खींचा।
अब टिंगू बड़ा परेशान हुआ। हर अच्छा काम करने पर चाँटा पड़ जाता है या कान खींचा जाता है। उसने सोचा कुछ भी हो, मैं अच्छे काम करूँगा और अच्छा लड़का बनूँगा।'
स्कूल जाने का समय हो गया। माँ ने कहा–टिंगू स्कूल क्यों नहीं जाता ?'
टिंगू ने कहा–'अब मैं स्कूल नहीं जाऊँगा। घर पर ही मास्टर साहब की फोटो सामने रखकर पढ़ाई करूँगा।'
माँ ने पूछा–'तू पागल हो गया है क्या ?'
टिंगू ने कहा–'मैंने एकलव्य की कहानी पढ़ी है। गुरू द्रोणाचार्य ने उसे शिक्षा देने से इंकार कर दिया था। तब उसने गुरू की मूर्ति बनाकर उसके सामने तीर चलाने का अभ्यास किया और सबसे आगे बढ़ गया। मुझे भी कल मास्टर साहब ने कक्षा से बाहर निकाल दिया था। मैं भी उनका फोटो सामने रखकर यहीं पढ़ूँगा और कक्षा में पहले नम्बर पर आ जाऊँगा।'

मनीषा, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

माँ उसकी बात सुनकर हंसी। फिर सबने मिलकर उसे डाँटा और स्कूल भेजा। टिंगू बस्ता लटकाए रोते–रोते स्कूल पहुँचा।
उसने आँसू पौंछ लिए। तय किया कि चाहे जो हो जाए, अच्छे काम जरूर करूँगा। उसने पुस्तक में पढ़ा था कि जब गुरूजी दिखें उन्हें आदर से प्रणाम करना चाहिए।

उसने अपने शिक्षक के सामने जाकर कहा–'प्रणाम, गुरू जी।'
वह बरामदे में आते दिखे तो उसने कहा–'प्रणाम, गुरू जी।'
छुट्टी में वह मैदान में दिखे ,तो फिर उसने कहा–'प्रणाम, गुरू जी।'
उसने दस–बारह बार 'प्रणाम गुरू जी' किया। उसके शिक्षक परेशान हो गए। उन्होंने समझा कि वह उनकी हँसी उड़ा रहा है। उन्हें गुस्सा आ गया। उन्होंने डाँटकर कहा–''क्यों रे, यह तूने क्या लगा रखा है ? दिन भर 'प्रणाम, गुरू जी' करता है। जा बेंच पर खड़ा हो जा।''
उसकी कक्षा के लड़के उसे देखकर हँसने लगे। उसे बुरा लगा। उसका मन हुआ कि एक–एक को पीटे। फिर उसने सोचा कि क्रोध करना अच्छी बात नहीं है। इसलिए उसने लड़कों से कहा–'' मैं अच्छा लड़का हूँ, इसलिए क्रोध नहीं करता। मुझे गुस्सा आ जाएगा तो तुम सबके मुँह तोड़ दूँगा। अभी सबको माफ कर रहा हूँ।' इस पर लड़के और जोर से हँस दिए।
शिक्षक ने उससे कहा–'बहुत बक बक कर रहे हो। जाओ, कक्षा से बाहर निकल जाओ।'
टिंगू बस्ता लेकर बाहर आ गया। वह थोड़ी देर तक मैदान में घूमता रहा। फिर घर आ गया।
शाम को उसने जल्दी भोजन किया और तुरंत सोने लगा। उसकी माँ ने कहा–'टिंगू तू तो षाम से ही सोने लगा। पढ़ेगा नहीं ?'
टिंगू ने लेटे–लेटे कहा–'अच्छे लड़के रात को ज्यादा नहीं जागते। वह जल्दी सो जाते हैं।'
माँ टिंगू के पास आई। उसने टिंगू का कान उमेठा–'बड़ी–बड़ी बातें बनाता है। पढ़ने से जी चुराता है। चल पढ़ने बैठ।'
टिंगू जरा देर रोया। फिर पढ़ने लगा।
वह सोचता रहा–'मैंने आज दिन भर अच्छे काम करने की कोशिश की। प्रशंसा की बजाय मुझे चार तमाचे पड़े, दो घूँसे पड़े, तीन बार कान उमेठे गए। तीन बार डाँट खाई। बेंच पर भी खड़ा किया गया। कक्षा से भी निकाला गया। पर मेरी क्या गलती है ?
टिंगू को कोई गलती समझ में नहीं आई। इस कहानी को पढ़ने वाले लड़के बताएँ कि टिंगू की क्या गलती थी ?
जब टिंगू सारे काम किताबों में लिखी बातों के अनुसार कर रहा था तो भी उस पर डाँट–पिटाई क्यों पड़ती थी ? क्या किताबों में झूठ बातें भी लिखी रहती है?

हरिशंकर परसाई

कविताएँ

बगुले

सफेद पंखों वाले बगुले
फर फर फर उड़ आते बगुले
आसमान में उड़ते–उड़ते
खेतों में आ जाते बगुले
कीड़े मकोड़े खाते बगुले
खाकर फिर उड़ जाते बगुले

प्रियंका बैरवा, कक्षा 8 उम्र 14 वर्ष,

सोने की चिड़िया

सोने की चिड़िया
चुपके से आना
शोर मत मचाना
आँख बंद करके
तालियाँ बजाना
थपकी लगा के
वापस चली जाना

लक्ष्मी सैनी, आशा गुर्जर, कक्षा 8

आरती,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–रौशनी

कुत्ते भौंके दो हजार

बकरी चली बजार
कुत्ते भौंके दो हजार
बकरी ने देखा सिपाही
बोली–जान बचाओ भाई
सिपाही ने बंदूक उठाई
कुत्तों ने सोचा–
भागने में है भलाई।

दिलखुश मीना, विष्णु, अजय, लोकेश कक्षा 8

मामा चुप मामी चुप

मामा–मामी गए बजार
बाजार से लाए दो बिस्कुट
हमने खाए कुट कुट
मामा चुप मामी चुप

हरिओम मीना, कक्षा 6

छोकरियों की बकरियाँ

डोकरी की झोंपड़ी में
घुस गई बंदरिया
बंदरिया को देखकर
आ गई बकरियाँ
बकरियों के पीछे–पीछे
आ गई छोकरियाँ
छोकरियों के पीछे–पीछे
आ गई डोकरिया
बकरियों से छोकरियों से
भर गई झुपड़िया
झुपड़िया से कूद–कूद
भाग गई बकरियाँ
अपनी–अपनी बकरियाँ
ले गई छोकरियाँ

कृष्णा, उम्र–5 वर्ष, समूह–मुस्कान

निकिता, उम्र–10 वर्ष, **जासिम**, उम्र–12 वर्ष, **रीना**, उम्र–12 वर्ष, **वसीम**, उम्र–15 वर्ष, **अंकुर किरोड़ी, सुमन, पूजा, दीपिका, गायत्री, अभिषेक** (राज. विद्यालय–भूरी पहाड़ी, डूंगरी) आदि बच्चों ने मिलकर बनाई कविता।

दीपक, उम्र–11 वर्ष, समूह–संगम

शरारती बिल्ली

एक थी बिल्ली
बड़ी शरारती
जा पहुंची घर में
देखा एक बिल में
छोटा सा चूहा
बिल्ली ने आवाज निकाली
चूहे ने सोचा–
है क्या मुसीबत
देखते हैं चलकर

चूहा आया बाहर
बिल्ली ने किया विचार–
'आ गया शिकार'
चूहा ने बाहर झाँका
उलटे पाँवों भागा
बिल्ली ने किया विचार–
भाग रहा है षिकार
दिखा दो अपना भी वार

रामकेश मीना

त्रिलोक,
उम्र–14 वर्ष,
समूह–पीपल

टन टन टन

टन टन टन
बारह बटन
सूखी रोटी
अमिता बचन
अमिता बचन ने खाया पान
उसमें निकला शाहरुख खान
शाहरुख खान ने खायी सुपारी
उसमें से निकली मीना कुमारी
मीना कुमारी का लाल दुपट्टा
बोलने वाला–उल्लू का पट्ठा

राजवीर अंधेरिया, कक्षा 8

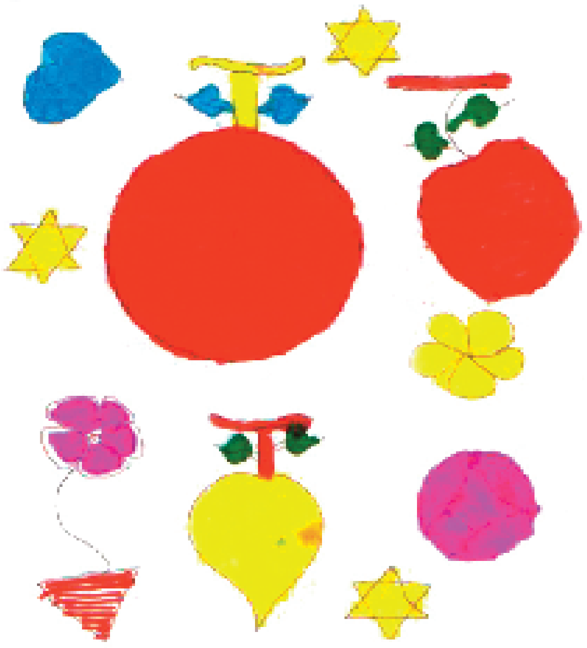

मुस्कान, उम्र–7 वर्ष, राजकीय विद्यालय, चकेरी

एक बड़े राजा की बेटी

एक बड़े राजा की बेटी
दो दिन से बिस्तर पे लेटी
तीन महात्मा सुनकर आए
चार दवा की पुड़िया लाए
पाँच–पाँच घण्टे गरम कराई
छह–छह घण्टे दवा पिलाई
सातवें दिन फिर आँखें खोली
आठवें दिन मम्मी से बोली
नवें दिन फिर दौड़ लगाई
दस तक गिनती सीखो भाई

हरिओम मीना, कक्षा 6, 9 वर्ष

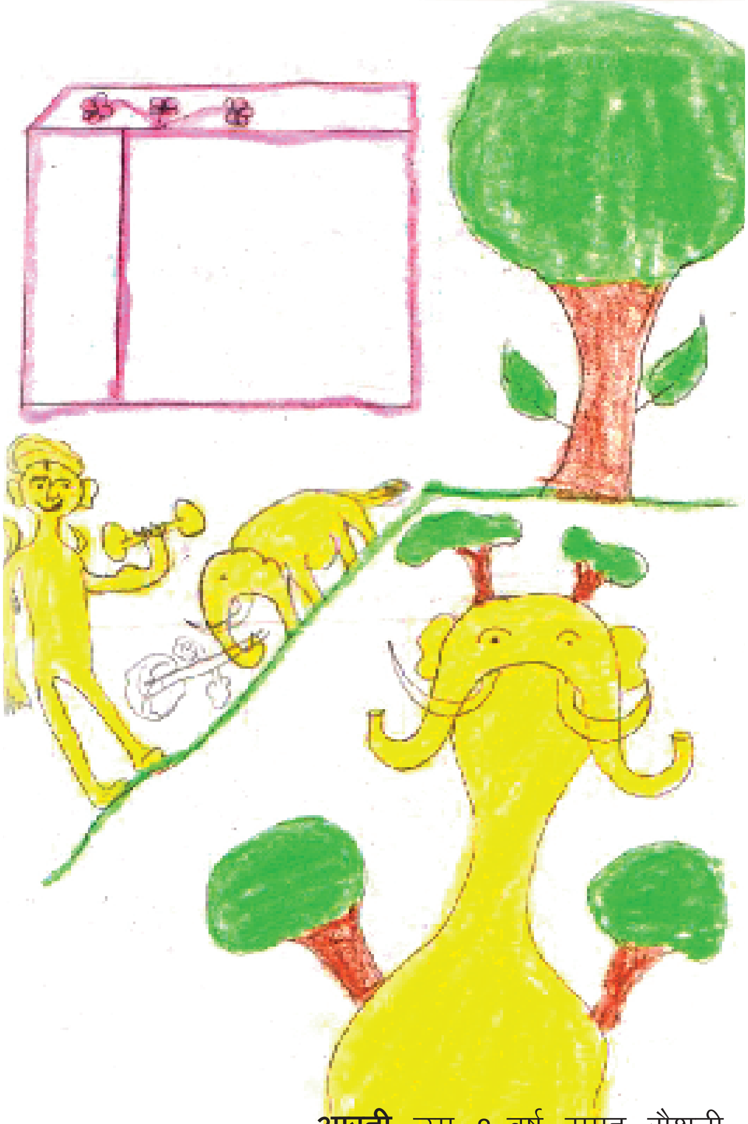

आरती, उम्र–8 वर्ष, समूह–रौशनी

तीर बने तुक्के

प्रिया मीना,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–रौशनी

1. आओ मेरे दोस्तों
काँच की प्लेट में
नींबू का अचार था
आओ मेरे दोस्तो
तुम्हारा इंतजार था

भावना राय, उम्र–13 वर्ष, कक्षा 6

2. भातैइ कू रसगुल्ला
भात आ गया, भात आ गया
हो गया हल्ला–गुल्ला
गांव कू तो दाणा–पूड़ी
भातैइ कू रसगुल्ला

नाजिम अली, कक्षा–7, रा.उ.मा.वि. मखौली

3. जो नहीं लिखते
अंगूर के रस को
जूस कहते हैं
जो गीत कविता नहीं लिखते
उनको हम कंजूस कहते हैं

दिलराज पाण्डेय, 14 वर्ष,

4. धूपाड़ा पूपाड़ा
आता हूँ जाता हूँ
लगाता हूँ धूपाड़ा
लोग मुझे कहते हैं
शम्भू पूपाड़ा
आता हूँ जाता हूँ
उठाता हूँ चकला
लोग मुझे कहते हैं
कालूराम टकला

हरिराम, अनिल, प्रिंस, मुकुट, राम लखन, नरेश कुमार, कुलदीप, कालू, विक्रम (रा.उ.मा.वि.–भूरी पहाड़ी)

एक साईकिल वाली बुढ़िया

करिश्मा प्रजापत,
उम्र–7 वर्ष, समूह–सितारे

एक बुढ़िया थी। अकेली थी। उसने एक साईकिल खरीद ली। साईकिल से ही पानी भरने जाती। साईकिल से ही लकड़ी लाती। इससे वह बड़ी खुश रहने लगी।

एक दिन बुढ़िया जंगल में लकड़ी लेने गई तो उसकी कहीं दूसरी जगह निगाह थी। बुढ़िया को पता ही नहीं चला कि उसने साईकिल पेड़ पर चढ़ा दी। साईकिल नीचे गिर गई और बुढ़िया पेड़ पर लटक गई। लटके–लटके ही उसने सोचा कि मुझे पेड़ से उतरना नहीं आता। सो लटकी रहती हूँ।

तभी बुढ़िया ने देखा पेड़ के ऊपर से एक हैलिकोप्टर जा रहा था। बुढ़िया को पेड़ से उतरना नहीं आता था पर लटकना तो आता था। वह उचककर हैलिकोप्टर के लटक गई। हैलिकोप्टर उड़ता जा रहा था। नीचे नदी बह रही थी। नदी को देखते ही बुढ़िया को प्यास लग आई। प्यास इतनी जोर से लगी थी कि वह तो नीचे कूद ही गई। पानी पीकर एक लकड़ी को पकड़कर बहती हुई किनारे तक पहुँच गई। अब उसे भूख लगी। नदी किनारे पेड़ पर बंदर जामुन खा रहा था। बंदर को जामुन खाते देखते ही बुढ़िया को बड़ी तेज भूख लग गई। उसने बंदर से कहा–'थोड़ी जामुन मुझे भी तो दे।' बंदर ने जामुन दे दी। तभी बुढ़िया को पेड़ के नीचे अपनी सा. ईकिल पड़ी दिख गई।

बुढ़िया ने साईकिल खड़ी की। बैठी। पैडल मारे। खुशी–खुशी घर गई।

पूजा शर्मा, कक्षा 9 गांव–रांवल और **प्रभात**

सच?

लक्ष्मी, उम्र–4 वर्ष,
राजकीय विद्यालय
संग्रामपुरा

एक दिन चिड़िया उड़ती आई। दाने लाई और बच्चों को खिलाया। तोते ने चिड़िया को देखा तो देखते ही आवाज दी। चिड़िया ने तोते से कहा कि तुम कहाँ से आए? तोता बोला–'मेरा तो इस पेड़ पर घोंसला है। मैं यहाँ रहने लग गया हूँ। चिड़िया तुम भी मेरे पास रहो तो अच्छा रहे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।

'सच?' चिड़िया ने कहा।

'हाँ सच। मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगा।' तोते ने कहा।

सुगना मीना, उम्र 10 वर्ष,
कक्षा 4, रा.उ.प्रा.वि. उलियाना

बवण्डर

एक बार की बात है। एक गाँव में बवण्डर आ गया। वबण्डर ने सारे गाँव को तबाह कर दिया। गाँव में एक आदमी चालाक था। उसने कहा कि मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। मैंने एक ऐसी जगह देखी है–'जहाँ कोई भी आता जाता नहीं है। वहाँ गाँव बसा लें तो हम बच सकते हैं। सब गाँव वालों ने उसकी बात मान ली।

गाँव वालों ने वहाँ अपना गाँव बसा लिया। दूसरे दिन फिर वहाँ बवण्डर आ गया। गाँव वाले परेशान हो गए। बोले–'वापस उसी जगह पर गाँव बसा लेना चाहिए।

मोनू मीना, उम्र 10 वर्ष, कक्षा 4

विक्रम, उम्र–5 वर्ष,
समूह–फुलवारी

पिल्ला अगले दिन फिर आया

एक बार मैं साईकिल चला रहा था तो बच्चे एक पिल्ले को परेशान कर रहे थे। मैंने बच्चों को भगा दिया और पिल्ले को घर ले आया। मम्मी दूध लेने गई थी। मैंने पिल्ले को बिस्किट खिलाए, चीज खिलाई। मम्मी दूध लेकर आई। मैं चुपके से गया और थोड़ा दूध ले आया और उसको दूध पिलाया। फिर उसको तौलिया ओढ़ाकर वापस छोड़ आया।

फिर वो पिल्ला अगले दिन दुबारा आया।

नील, कक्षा 5, उम्र 9 वर्ष रा.उ.प्रा.वि. आवासन मण्डल।

जीतेन्द्र नायक, उम्र–11 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

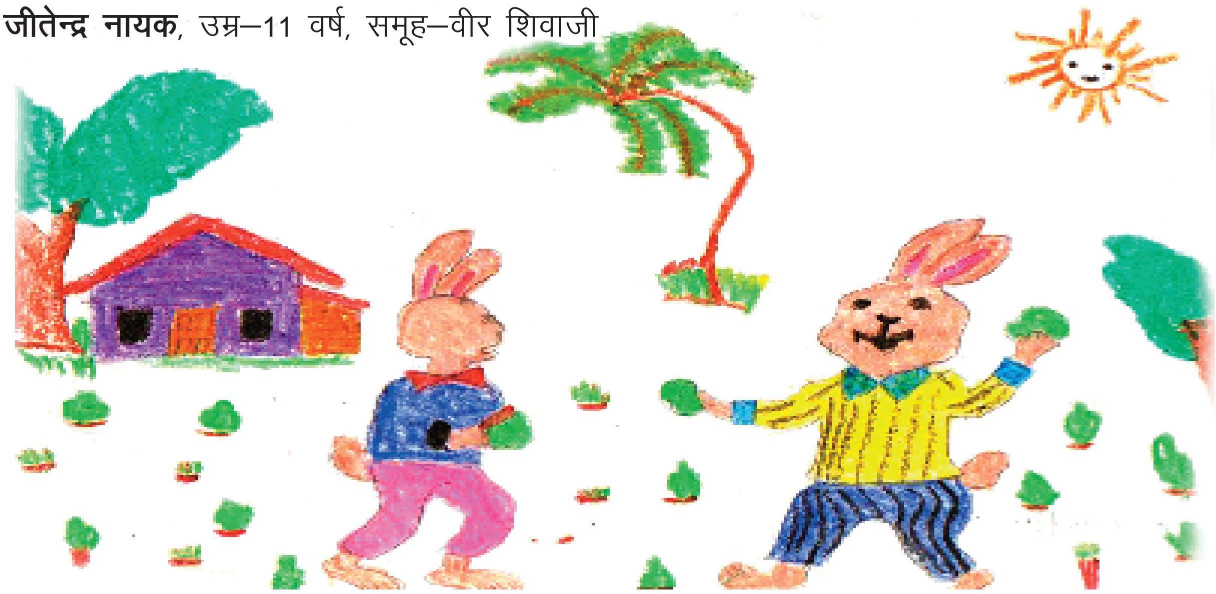

माफ कर देना

एक बार मैं और मेरा मित्र बाजार जा रहे थे। हमने एक दुर्घटना देखी। एक मोटर साइकिल वाला सड़क पार कर रहा था। उधर से एक ट्रक आ रहा था। उस ट्रक के ब्रेक फेल हो गए और मोटरसाइकिल को टक्कर लग गई थी। उस आदमी के सिर में लग गई थी। इतने में पुलिस वहाँ आ गई। पुलिस वाले ने एम्बुलेंस बुलवा. ई। उस आदमी को हॉस्पिटल ले गए।

मेरे मित्र ने कहा कि मम्मी–पापा हमको भी साईकिल नहीं चलाने देंगे।

मेरे भाई–बहनों मुझसे इस कहानी को लिखने में गलती हुई हो तो मुझे माफ कर देना।

कुलदीप केवट, कक्षा 7, उम्र 13 वर्ष, गांव–धीरोली

बिल्ली और बुढ़िया

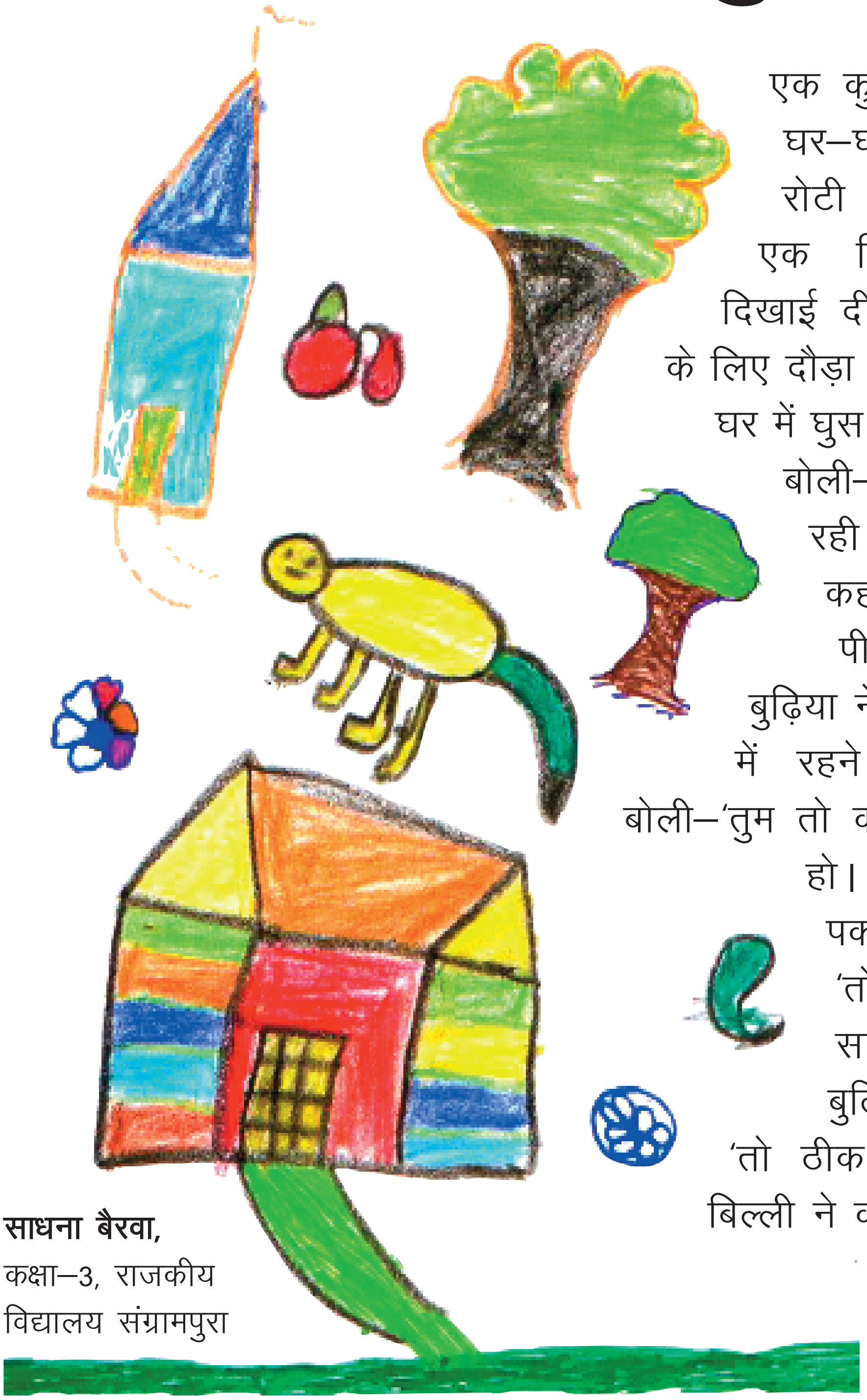

साधना बैरवा,
कक्षा–3, राजकीय विद्यालय संग्रामपुरा

एक कुत्ता था। वह रोजाना घर–घर में जाकर, एक–एक रोटी खाकर चला जाता। एक दिन उसको बिल्ली दिखाई दी तो वह उसे पकड़ने के लिए दौड़ा। बिल्ली एक बुढिया के घर में घुस गई। बुढ़िया बिल्ली से बोली–'तुम इतनी घबरा क्यों रही हो?' बिल्ली ने कहा–'एक कुत्ता मेरा पीछा कर रहा है।' बुढ़िया ने बिल्ली को अपने घर में रहने को कहा। बिल्ली बोली–'तुम तो काम करने चली जाती हो। पीछे से आकर कुत्ते ने पकड़ लिया तो?'

'तो ठीक है तुम भी मेरे साथ खेत में चलो।' बुढ़िया ने कहा।

'तो ठीक है, मैं भी चलूँगी।' बिल्ली ने कहा।

तो कुछ दिन बाद की बात है। बुढ़िया बिल्ली को घर पर छोड़ गई और खुद खेत पर काम करने चली गई।

बिल्ली ने कुत्ते को बुढिया के घर में आते देखा। वह तो कोने छुप गई। कुत्ता सूँघता हुआ वहीं आ गया। बिल्ली छप्पर पर चढ़ गई। छप्पर से नीम में गई।

कुत्ता चला गया, बिल्ली बच गई।

निकिता शर्मा, कक्षा–7, रांवल

वो हमारे घर पर आकर क्यों बैठा?

एक दिन हमारे घर पर एक साँप आ गया। साँप बहुत बड़ा था। हम उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गये थे कि वो साँप कितना बड़ा है। वह हमारी डीवीडी के नीचे आकर बैठ गया।

वो हमारे घर पर आकर क्यों बैठा? हमें लगा कि हमारे घर की छत पर दो बिल्ली लड़ रही हैं। हमने सोचा की बिल्लियाँ ऐसे ही लड़ रही होंगी। पर जाकर देखा तो वो बिल्लियाँ नही थीं। एक बिल्ली और एक साँप लड़ रहे थे। मेरे पापाजी ने एक कंकड़ मारा जो उस साँप के जाकर लगा। साँप गुस्से में हो गया और वो धीरे–धीरे हमारे घर पर छत पे से उतर कर चला गया।

भारती,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–खुशबू

मेरे पापाजी बाहर चले गये। जब पापाजी वापस आये तो अन्दर जा रहे थे कि उन्होंने देखा–'साँप दरवाजे के पास था। मेरे पापाजी आश्चर्यचकित रह गये।

कविता मीना, कविता शर्मा, किस्कंधा मीना

भालू परिवार और वह रात

रामधनी गुर्जर, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

एक बार मैं रात को बस से खण्डार जा रही थी। पहली बार मैं जंगल में रात में सफर कर रही थी। काली रात में लम्बे लम्बे ऊँचे ऊँचे पेड़ देखकर ही डर लग रहा था। लगातार खिड़की से बाहर देखते हुए डर लगने लगा। मैं सोच रही थी की अगर इस रात में पैदल जाना होता तो क्या होता। अचानक बस का ब्रेक लगा और सारी सवारियां एक दूसरे के ऊपर चिल्ला कर गिरने लगी. मैं अपनी सोच से बाहर आई तो देखा सामने बस के भालुओं का परिवार खड़ा था. विशालकाय भालुओं को देख कर इतनी सर्दी में पसीने छूट रहे थे. लगातार वे भालू हमारी बस को धक्का दे रहे थे। उनके हर धक्के से ऐसा लगता था की बस पलट जायेगी। सभी सवारियाँ भगवान से प्रार्थना करने लग गयी कि ये भालू चले जाएं। भालू ऐसे लग रहे थे जैसे वो बहुत गुस्से में हो और उनका गुस्सा हमारे ऊपर उतरने वाला है। समय भी जैसे रुक गया हो। दूर दूर तक कोई नहीं दिख रहा था। अचानक खिड़की का शीशा टूट गया और सारी सवारियाँ चिल्लाने लगी–'बचाओ...बचाओ...!' तभी ड्राईवर ने बस की लाइट बंद कर दी। टूटी खिड़की में से एक भालू ने एक औरत का हाथ पकड़ लिया। अब क्या करें। सभी सवारियों ने हिम्मत दिखाई और उस औरत को खींच लिया. इस तरह उस औरत को बचाया. हमारे ही साथ ये सब हो रहा था. विश्वास नहीं हो रहा था। थोड़ी देर बाद भालुओ को अँधेरा जो अब बस में था और उन्हें कुछ नज़र नहीं आ रहा था. इस वजह से थोड़ी देर बस के चारों तरफ घूमने लगे और थककर चले गये. और हमारी जान में जान आई।

रेणु गुर्जर, शिक्षिका, बोदल

शेर का दर्द

एक बार एक ब्राह्मण जंगल में लकड़ी लेने गया। उसे पेड़ के नीचे शेर मिला। वह शेर उसके पास आ गया। वह ब्राह्मण बहुत डर गया। लेकिन शेर ने उसे नहीं खाया। ब्राह्मण ने उसके सर पर हाथ लगाया। लेकिन उसने फिर भी नहीं खाया। शेर बोला–'मेरा कोई दोस्त नहीं है, क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?' ब्राह्मण ने हाँ भर दी। वे दोनों दोस्त बन गये। अब साथ–साथ रहते थे।

एक दिन ब्राह्मण की बेटी की शादी थी। ब्राह्मण ने शेर को न्योता दिया। शादी में आने के लिए शेर खूब अच्छे से नहाया। बहुत अच्छे से तेल लगाया. नए कपडे पहने और शादी में चला गया।

जब गाँव वालों ने शेर को शादी में आते हुए देखा तो कुत्ते तो दुम दबा कर भाग गये। गाँव के लोग घरों में घुस गये। अचानक ब्राह्मण वहाँ आ गया। उसने गाँव वालों से कहा–'इससे मत डरो ये तो कुत्तों से भी डरपोक है।' फिर सभी लोगों ने अच्छे से शादी मनायी। लेकिन शेर के दिल में तो वही बात चुभ रही थी–'मैं तो जंगल का राजा हूँ और इसने मुझे कुत्ते से भी डरपोक बता दिया।'

एक दिन ब्राह्मण जंगल में गया तो शेर ने उससे कहा कि या तो तू अपनी कुल्हाड़ी से मेरे पर मार दे या मैं तुझे खा जाऊँगा।' ब्राह्मण ने उसके कुल्हाड़ी की मार दी और वहाँ से भाग छूटा। फिर वह दो दिन बाद जंगल आया। फिर से उसने देखा की शेर तो जीवित था। शेर ने उससे कहा कि मेरे ये कुहाड़ी के घाव तो भर जाएंगे, पर जो बात तुमने कही थी वो आज भी मेरे दिल में चुभ रही है। मैं चाहूँ तो मैं अभी तुम्हारा शिकार कर लूँ लेकिन यही कहता हूँ, तुम यहाँ से चले जाओ। मुझे ऐसा दोस्त नहीं चाहिए।'

कविता मीना और **किरण मीना**

जियालाल, उम्र–11 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

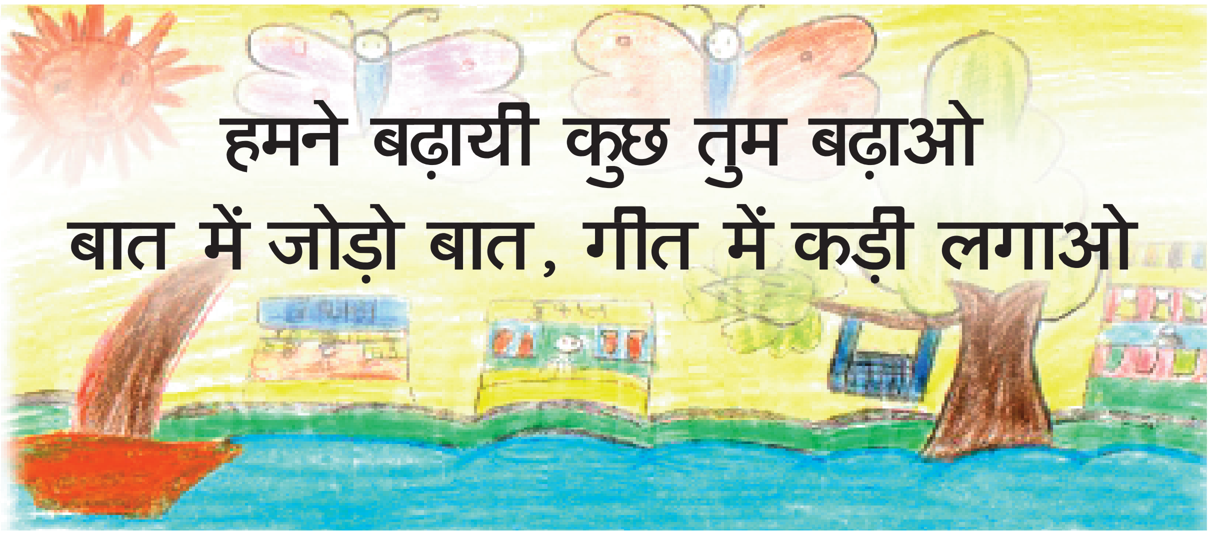

शिवानी, उम्र–12 वर्ष, समूह–शीशम

अधूरी कहानी पूरी करो–1

कहानी को पढ़कर समझें और इसे आगे बढ़ाएं–

रात के समय घर में मगरमच्छ घुस गया। अंदर कमरे में आ गया और आकर खाट के नीचे सो गया। रात में घर की एक औरत पानी पीने उठी। पानी पीकर वापस आई तो उसने देखा खाट के नीचे मगरमच्छ सो रहा है। वह घबरा गई पर जोर से चिल्लाई–''उठो–उठो घर में मगरमच्छ है'' उसने अपने पति से कहा। पति खाट पर से उछल पड़ा। वह चिल्लाता हुआ गांव में भागा। धीरे–धीरे सुबह हो रही थी।

(**रामकेश मीना, कालू मीना, भीमसिंह मीना**, रा.उ.प्रा.वि. उलियाना)

अधूरी कहानी पूरी करो–2

कहानी को पढ़कर समझें और इसे आगे बढ़ाएं–

स्कूल में बड़ का पेड़ था। सांप बड़ के पेड़ के नीचे बैठा था। हमारी मैडम वहाँ गई तो साँप तेजी से दौड़ा और घास में जाकर बैठ गया। हमारी मैडम को साँप का पता नहीं था। जब वह साँप वहाँ से जा रहा था तो बच्चों ने उसे देखा।

(**कोमल मीना**, रा.बा.उ.प्रा. विद्यालय)

अधूरी कहानी पूरी करो–3

कहानी को पढ़कर समझें और इसे आगे बढ़ाएं–

मैं एक रात शहर से घर लौट रहा था। रास्ते में मैंने एक भूत देखा। मैं डर गया। मैं चुपके–चुपके आने लगा। जैसे ही भूत को पता लगा वो छुप गया। मैंने सोचा भूत चला गया। जैसे ही मैं चला वैसे ही मेरे पीछे कोई भागता। मैं डर कर रुक गया तो भूत का मेरे पीछे चलना बंद हो गया। मैंने मन ही मन कहा–'हिम्मते मरदां, मदद–ए–खुदा।' फिर मैंने कहा जो डरता है वो ही मरता है। मुझे लगा कि मेरे पीछे कोई है।

(**नाजिम अली**, कक्षा–7, रा.उ.मा.वि.मखौली)

अधूरी कहानी, जो आगे बढ़ाई

कहानी को पढ़कर समझें और इसे आगे बढ़ाएं–

मेरा प्यारा काका

(**जसकौर मीना**, कक्षा 10)

एक किसान सुबह उठकर बैलों को लेकर खेत में गया। खेत में बैलों को हल से जोड़कर हल चलाने लगा। हल चलाते–चलाते उसे शाम हो गई। वह घर आया और बैलों को बांध दिया। रात हो गई थी।

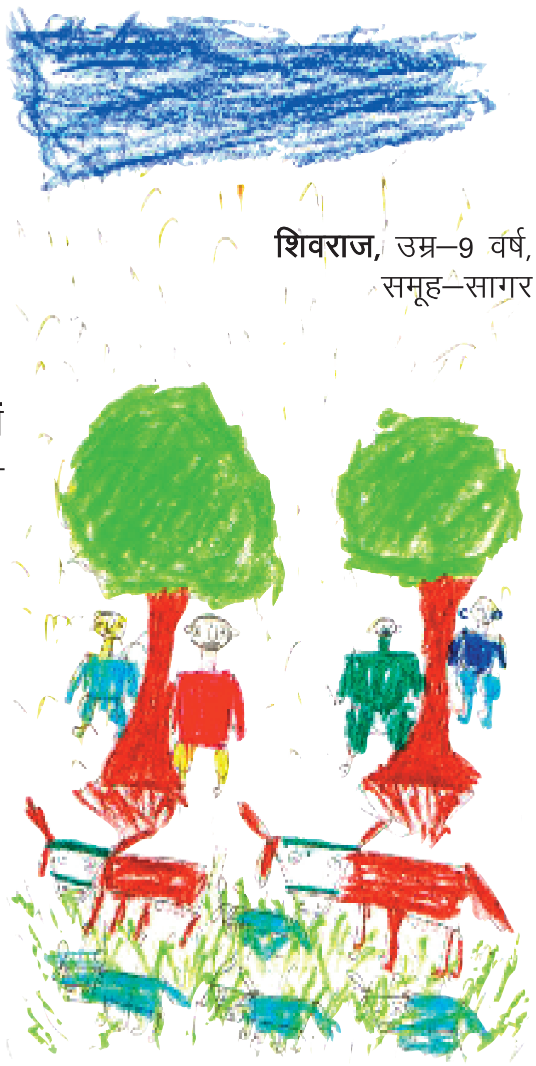

शिवराज, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

उसकी बेटी ने कहा–'काका अब आए हो?'

किसान ने कहा–'बेटी तुम सोई नहीं?' बेटी ने कहा–'काका अभी तो मैंने दवाई नहीं ली है।' किसान ने कहा–'बेटी दवा नहीं लोगी तो ठीक कैसे होओगी?'

फिर किसान ने पूछा'बेटी तुमने खाना तो खा लिया?' बेटी ने कहा–'मैं खाना कैसे खाती। मैं तो आपका इंतजार कर रही थी। अब आप आ गए हो। अब हम दोनों साथ खाना खाएंगे।' और उन्होंने खाना खा लिया। फिर बेटी ने कहा–'अब मैं दवाई लेती हूँ।' उसने शीशी में देखा–'दवाई तो है नहीं।' उसने काका को बताया–'आज दवाई ही नहीं है। दवा के लिए पैसे कहां से लाओगे?'

'बेटी मुझे किसी के यहां मजूदरी करनी पड़ेगी।

'काका मजदूरी करने कहां जाओगे?'

'किसी के घर मैं काम करूंगा। वहाँ से पैसा मिलेगा, उसकी दवाई लाऊँगा। फिर तुम ठीक हो जाओगी। फिर हम दोनों काका–बेटी काम करेंगे।' काका ने कहा।

'मेरा प्यारा काका।' कहते हुए बेटी का गला भर आया।

(यह कहानी **अरविन्द जैन, निर्मला जैन**, कक्षा–7, पिपलदा, ने आगे बढ़ाकर पूरी की है।)

कविता आगे बढ़ाओ

1

चीं चीं चीं चीं चिड़िया
फरफर फरफर चिड़िया
बच्चों को खिलाकर दाना
शहर उसे है जाना

(**बबीता, सुमन, कविता, कोमल**,
रा.बा.उ.प्रा.वि. भूरी पहाड़ी)

2

रसीद खान, मखौली, बनवारी गुर्जर
के द्वारा लिखी हुई कविता को –

एक आदमी जिसके हाथ नहीं हैं
लेकिन वह सारा सामान लाता हैं
ताकि उसे मजबूर न होना पड़े
किसी पर बोझ न बनना पड़े

रीना गुर्जर, भावना द्वारा आगे बढ़ाया

कविता जो आगे बढ़ाई

1. **सुभाष मीना**, भूरी पहाड़ी के द्वारा लिखी हुई अधूरी कविता को

एक बिल्ली थी
समझदार थी
सब बच्चों की
बड़ी यार थी
एक बच्चा था
सबसे छोटा
पकड़ पूंछ
बिल्ली की रोता।
एक कुत्ता था
समझदार था
सब बच्चों का
बड़ा यार था
एक बच्ची थी
सबसे छोटी
पकड़ पूंछ
कुत्ते की रोती।

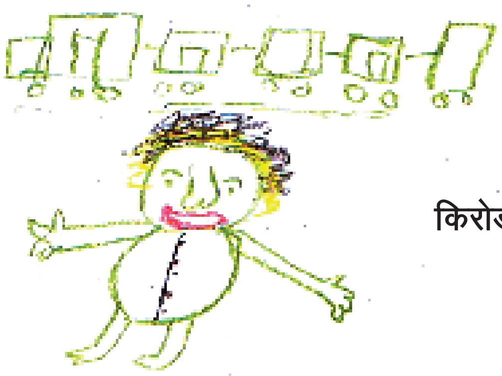

किरोड़ी, उम्र–9 वर्ष,
समूह–कदम्ब

नरेशी, कक्षा 5 हीरामन की ढाणी, श्यामपुरा द्वारा आगे बढ़ाया गया।

2. **जासिम, वसीम, राजेन्द्र, किरोड़ी**,
रा.उ.मा.वि. भूरी पहाड़ी के द्वारा लिखी हुई अधूरी कविता को

सड़क बड़ी है लम्बी चौड़ी
फिर भी मैडम आवै मौड़ी।
सड़क पै मोटर गाड़ी दौड़ी
फिर भी क्यों हो जाती मौड़ी
रुक रस्ता में खाय कचौड़ी
सात बजे वाली बस छोड़ी
आगे डटगी सोनकच्छ में
जिसूं मैडम होगी मौड़ी।

संदीप, पूरण, कक्षा–8,
रीना शर्मा, कक्षा 7 द्वारा आगे बढ़ाया गया।

अशोक नायक,
उम्र–13 वर्ष,
समूह–सूरज

पूजा बैरवा, कक्षा–3,
राजकीय विद्यालय
संग्रामपुरा

3.
तोता उड़ता है गगन में
हमको है उस पर विश्वास
तोता, गिरेगा नहीं गिरेगा नहीं
कोयल आमों के कुंजों में
हमको है उस पर विश्वास
मीठा, गाती रहेगी, गाती रहेगी
आसमान से बूंदे आयीं
हमको है उस पर विश्वास
बारिश, आती रहेगी, आती रहेगी

सुरेश चंद, शिक्षक

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ बूझो यार पहेलियाँ

1. छोटा सा रामदास, कपड़े पहने सौ पचास।
2. दीवार पर घोड़ा, जब चाहा कान मरोड़ा।
3. ऐसा बंदर जो उछले पानी के अंदर।
4. पहाड़ जंगल रेगिस्तान, घूमता रहता वह शैतान।
5. हमने देखा ऐसा वीर, गाना गाकर मारे तीर।
6. एक सींग की ऐसी गाय, जितना चारा डाले उतना खाय,
   पेट उसका भर ना पाय
7. मुंईं कटूं मुंईं मरूं, पण तू कामी रोवै।

विष्णु सैन, कक्षा 8, जमुल खेड़ा, **भीम सिंह मीना**, **नवीन जांगिड़**, कक्षा–6, रा. उ.प्रा.वि. उलियाना, **अजय**, कक्षा 8 गांव–तालड़ा, **मनीष** गुर्जर, कक्षा 4

सोना,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–संगम

हीहीही-ठीठीठी

1. एक शहर की लड़की की शादी गाँव में कर दी। सासू माँ बोली–'बहू भैंस को चारा डाल दे।' लड़की ने भैंस के पास जाकर देखा तो भैंस के मुँह में झाग आ रहे थे। लड़की ने आकर सासू को बताया–'माँ जी, भैंस तो अभी कोलगेट कर रही है।

2. एक आदमी हवाई जहाज से यात्रा कर रहा था। पास वाली सीट पर एक महिला बैठी थी। वह आदमी उससे बात करने को उत्सुक था। उसने गला साफ करते हुए पूछा–'क्या आप भी इसी यान से यात्रा कर रही हैं।

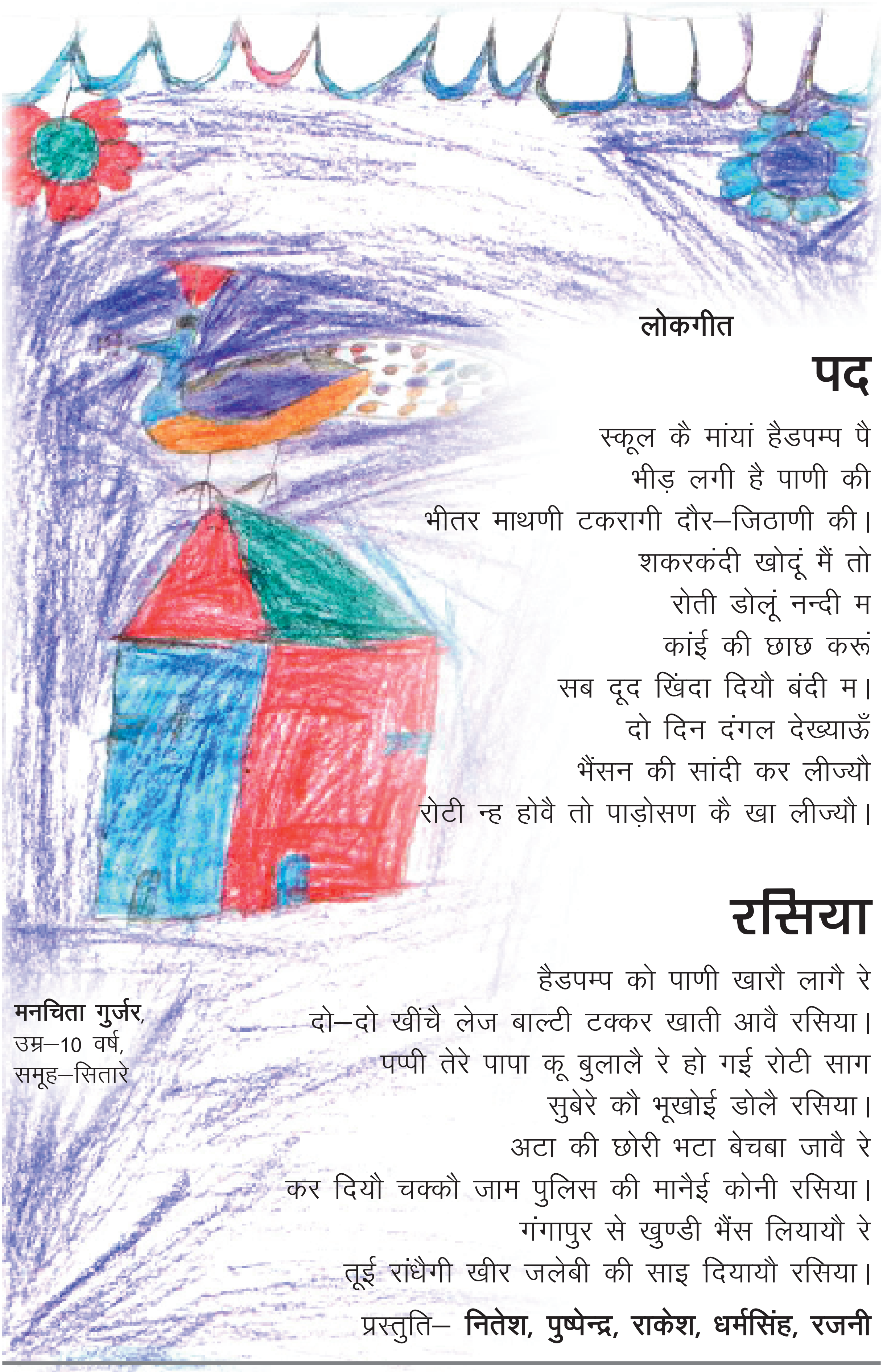

मनचिता गुर्जर,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–सितारे

लोकगीत

पद

स्कूल कै मांयां हैडपम्प पै
भीड़ लगी है पाणी की
भीतर माथणी टकरागी दौर–जिठाणी की।
शकरकंदी खोदूं मैं तो
रोती डोलूं नन्दी म
कांई की छाछ करूं
सब दूद खिंदा दियौ बंदी म।
दो दिन दंगल देख्याऊँ
भैंसन की सांदी कर लीज्यौ
रोटी न्ह होवै तो पाड़ोसण कै खा लीज्यौ।

रसिया

हैडपम्प को पाणी खारौ लागै रे
दो–दो खींचै लेज बाल्टी टक्कर खाती आवै रसिया।
पप्पी तेरे पापा कू बुलालै रे हो गई रोटी साग
सुबेरे कौ भूखोई डोलै रसिया।
अटा की छोरी भटा बेचबा जावै रे
कर दियौ चक्कौ जाम पुलिस की मानैई कोनी रसिया।
गंगापुर से खुण्डी भैंस लियायौ रे
तूई रांधैगी खीर जलेबी की साइ दियायौ रसिया।

प्रस्तुति– **नितेश, पुष्पेन्द्र, राकेश, धर्मसिंह, रजनी**

क्या आप बता सकते हैं
इन लोकगीतों में कौन–कौनसी लोक कथाएं छिपी हैं।
अगर हां तो उन्हें लिखकर मोरंगे में भेजो।

1.

सात समदंर कूद्यौ बंदर लंका म आयौ
म्हुंडो मत मोड़ै सीता जी थारी बेई मूंदड़ी लाया।

मांगीबाई,
उम्र–19 वर्ष,
समूह–सागर

2.

सावण म रे सावण म
सुण तेजाजी सावण म रे सावण म
काळी–काळी रे बादळयां गरजै रे।
सुण तेजाजी पम्पी रे पम्पी पै
काळा कौ तो बचन निभायौ रे।
सांकळ खोल म्हारी भाभी, मंजीरा लेबा आयौ रे
खाग्यो रे काळो नाग डिगी का मेळा म
ढोलकी तो बजा तेजाजी गावां रे।

परवेरू मेरी याद के

यक्ष, उम्र–11 वर्ष, समूह–बरगद

सवाईमाधोपुर

प्रिय शीला,

सेकेण्ड ग्रेड शिक्षक भर्ती परीक्षा में तुम्हारी सफलता हमारे परिवार के लिए हर्ष का क्षण है। तुमने जिन परिस्थितियों में रहकर यह सफलता प्राप्त की है, वे कम चुनौतिपूर्ण नहीं रही है। मैं देखता हूँ कि घर के ही सदस्यों की अजीबोगरीब दिनचर्याओं के चलते वहाँ पढाई का उपयुक्त वातावरण नहीं था। तुम्हारी सफलता उन बाधाओं को भूलकर प्रसन्न होने का क्षण है।

तुम सोचो तुम्हारी इस सफलता से सबसे अधिक खुश कौन है? मैं समझता हूँ इस सफलता से सबसे अधिक खुश हमारे बाबा, बड़े भाया और बड़े काका हैं, जो अब इस दुनिया में नहीं है। हमारे बाबा ने नब्बे से अधिक वर्षों तक गायें चरायीं। बड़े भाया ने रात के तीन बजे जागकर सुबह के नौ बजे तक खेत जोते। बड़े काका ने पशुओं के लिए जेवड़े बटे, खाटों के लिए बाण बटा। ऐतिहासिक रूप से हम अपने परिवार की महज दूसरी पीढ़ी हैं जो पढ़ लिख रही है। तुम पहली लड़की हो, जो कुछ समय बाद सरकारी सेवा में चली जाओगी। यह एक बड़ा परिवर्तन है। बहुत बड़ा परिवर्तन और बहुत बड़ी उपलब्धि। हजारों सालों से स्त्री को शिक्षा का अवसर नहीं था। हमारे परिवार में तुम्हारी पीढ़ी में जाकर यह संभव हो पाया कि लड़कियों को भी पढ़ने लिखने में भागीदारी के अवसर मिल सके।

तुम्हें महसूस करना चाहिए कि तुम्हारी इस सफलता ने तुम्हारे कंधों पर एक बड़ी जिम्मेदारी डाल दी है। सामाजिक बदलाव में अपनी निर्णायक भूमिका अदा करने की जिम्मेदारी। डिग्री तो औपचारिकता मात्र है। अब तुम पर है कि तुम सही मायने में अपने आपको शिक्षित व्यक्ति बना सको। अगर तुम ऐसा नहीं कर पाती हो तो तुम्हारा शिक्षिका होना रोजगार का एक जरिया भर होकर रह जाएगा। आमदनी के लिहाज से देखो तो जितना एक शिक्षक कमा पाता है, बहुत सारे सब्जी बेचने वाले भी उतना कमा लेते हैं। सब्जी वाले का साबका दिनभर सब्जी खरीदने वालों से पड़ता है। शिक्षक का साबका इंसानों की उस पीढ़ी से पड़ता है जिसे ज्ञान की धरोहर हस्तांतरित की जानी है। क्या तुम इस फर्क़ को महसूस कर पा रही हो?

तुम शिक्षा के जिस मुकाम पर हो तुम्हें इस मुकाम तक पहुँचाने में महात्मा फुले और

गाँधी जैसे अंसख्य नामी और बेनाम व्यक्तियों के अथक आजीवन श्रम का योगदान है। तुम्हें उनके ऋण से उऋण होने की स्मृति सदा बनी रहनी चाहिए। तुम्हें अपनी जिम्मेदारी को सही अर्थों में पूरा करने का स्वप्न देखना होगा। एक बेहतरीन शिक्षिका बनकर। एक ऐसी शिक्षिका बनकर जो विद्यार्थियों में ज्ञान को जीवंत कर सके। परिवार, समाज में ज्ञान को जीवंत कर सके, रच सके। इसके लिए तुम्हें नये सिरे से अध्ययन आरंभ करना होगा। अपनी रचनात्मक योग्यताओं और सामर्थ्य को पहचानना और उन्हें विकसित करना, इस तरह अपने जीवन को अर्थ देना, यही शायद जीवन है, जीने की कला है। वरना खाना–पीना, खरीददारी करना और जीवन भर यही करते हुए मर जाना, इसका कोई मतलब नहीं है। यह तो मिले हुए इंसानी जीवन के अवसर को खो देना है।

थोड़ी बहुत सफलताओं के साथ विशाल विफलताएँ, झीनी सी उम्मीदों के साथ व्यपाक निराशाएँ आजीवन चलती रहेंगी। लेकिन विफलताओं और निराशाओं का भोक्ता होना एक बात है और उनका दृष्टा होना एक बात है। विफलताओं और निराशाओं को भोगना तो सभी को पड़ता है लेकिन एक शिक्षित आदमी यह काबलियत अर्जित कर लेता है कि वह विफलताओं और निराशाओं के कारणों की ऐतिहासिक वजहों को समझ सके। समस्याओं के समाधान के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रयास करते हुए, धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर सके। यह प्रतीक्षा कई पीढ़ी लम्बी भी हो सकती है। मानव जीवन में जितनी गहरी उदासी की खाइयाँ हैं, उतने ही ऊँचे सुख के वैभव के शिखर भी है। हमें इन सबको अनुभव करना सीखना होता है। इंसान होना क्या है, इसकी खोज करनी चाहिए। हरेक पीढ़ी को अपने समय में अपने इंसान होने की खोज करनी पड़ती है। बुद्ध ने अपने समय में यह खोज की थी फिर भी गाँधी को अपने समय में यह खोज फिर से करनी पड़ी थी। हरेक को अपने इंसान की खोज करनी पड़ती है।

देखो, तुम्हारी इस सफलता ने मुझे भी ये सब बातें करने का अवसर दे दिया है। एक किस्से के साथ इस पत्र को खत्म करूँगा। फियोदोर दोस्तो एवस्की उस कतार में खड़े थे जिन्हें गोलियों से उड़ाया जाना था। उसी क्षण आदेश आया कि उन्हें गोली से उड़ाने के बजाय साइबेरिया भेजा जाएगा। वे बच गए। दोस्तो एवस्की ने अपने भाई को पत्र लिखा। आगे जीवन भर इतना और ऐसा लिखा कि दुनिया उन्हें रूस ही नहीं, दुनिया के महान लेखक के रूप में जानती है।

बधाई तुम्हें।

तुम्हारा भाई

प्रभात

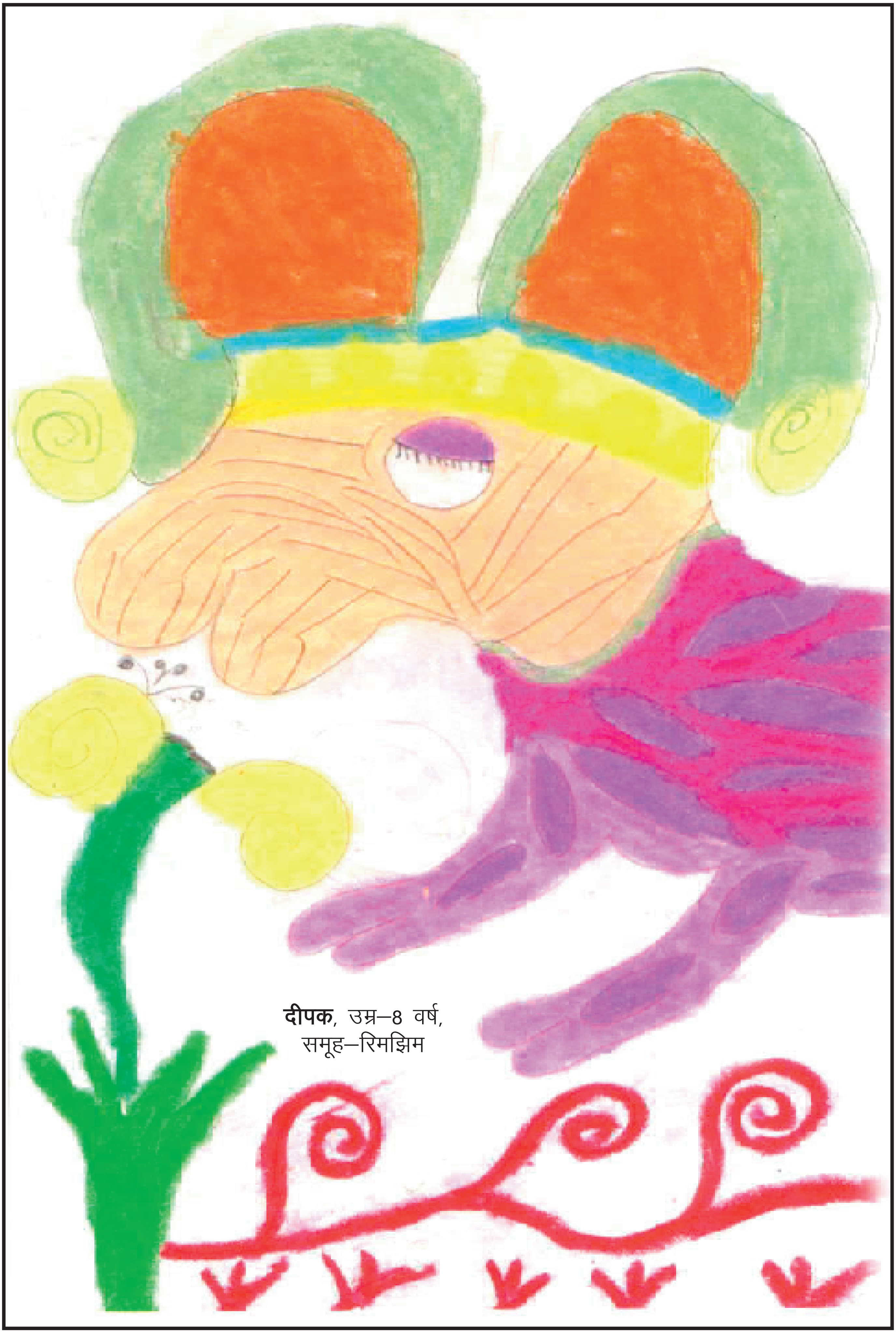

दीपक, उम्र–8 वर्ष,
समूह–रिमझिम